Faculty of Humanities

Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Core course/04/01

IV Semester Paper -I : (PAPER CODE : 44541)

PAPER NAME - प्राकृत शिलालेख एवं छन्द

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – प्रथम : **Paper Code** 44541

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 केडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–प्रथम	**प्राकृत शिलालेख एवं छन्द**	**100 अंक**
इकाई एक	प्राकृत शिलालेखः–अशोक के 1 से 8 शिलालेख (गिरनार पाठ) एवं खारवेल के शिलालेख का सटिप्पण अनुवाद	20 अंक
इकाई दो	प्राकृत के प्रमुख शिलालेखों पर सामान्य प्रश्न	20 अंक
इकाई तीन	खारवेल के शिलालेखों का सटिप्पण अनुवाद	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत एवं अपभ्रंश छन्द–निम्नलिखित प्राकृत छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण– गाहा, पथ्या, विपुला, उग्गाहा, गाहू, सिंहणी, गाहिणी, स्कन्धक, **अपभ्रंश के छन्द–** द्विपदि कड़वक, घत्ता, पज्झडिका, हेला, चौपाइया।	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत का लाक्षणिक साहित्य – छन्द, अलंकार एवं कोश के प्रमुख ग्रन्थों का परिचय	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. अशोक – डॉ. भण्डारक
2. अशोक – राधा कुमुद मुखर्जी
3. खारवेल शिलालेख – डॉ. शशिकान्त जैन
4. छन्दानुशासन – हेमचन्द
5. प्राकृत पैंगलम (सम्बन्धित अंश)
6. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास – डॉ. गुलाब चन्द चौधरी
7. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
8. अपभ्रंश अभ्यास सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Core course/04/02

IV Semester Paper -II : (PAPER CODE : 44542)

PAPER NAME - प्राकृत भाषा विज्ञान

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – द्वितीय : **Paper Code** 44542

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–द्वितीय	प्राकृत भाषा विज्ञान	100 अंक
इकाई एक	प्राकृत व्याकरण, प्राकृत व्याकरण के क्रिया एवं कृदन्त से सम्बन्धित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्र में से आठ सूत्रों को देकर चार सूत्रों की व्याख्या पूछना (139 से 182 तक)	20 अंक
इकाई दो	प्राकृत व्याकरण के प्रमुख ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारों का सामान्य परिचय	20 अंक
इकाई तीन	भाषा विज्ञान एवं पालि–प्राकृत, भारतीय आर्य भाषाओं के विकास का संक्षिप्त इतिहास (वैदिक भाषा, पालि, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश एवं आधुनिक भाषाओं के साथ प्राकृत का सम्बन्ध)	20 अंक
इकाई चार	ध्वनि परिवर्तन के प्रमुख नियम एवं प्राकृत (लोप, आगम, विपर्यय, ह्रस्वमात्रा नियम) समीकरण, विषमीकरण, स्वरभक्ति, संधि आदि के सोदाहरण, नियम) इसके लिए प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ.नेमिचन्द्र शास्त्री (अध्याय प्रथम पृ.1 से 23 एवं अध्याय पंचम पृ.113 से 153 का सम्बन्धित अंश का अध्ययन अपेक्षित)	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत में निबन्ध लेखन	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. हेमशब्दानुशासन (प्यार चन्द महाराज) की हिन्दी व्याख्या, ब्यावर
2. हेम प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदय चन्द्र जैन, 1983
3. प्राकृत स्वयं शिक्षक (खण्ड–1) – डॉ. प्रेम सुमन जैन
4. प्राकृत रचनोदय – डॉ. उदय चन्द्र जैन
5. प्राकृत भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण एवं उनके प्राक् संस्कृत तत्त्व – डॉ. के. आर. चन्द्रा, अहमदाबाद।
6. भाषा विज्ञान की रूपरेखा – डॉ. भोलानाथ तिवारी
7. भाषा विज्ञान की रूपरेखा – डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री
8. अपभ्रंश रचना सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर
9. अपभ्रंश अभ्यास सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर
10. प्राकृत हिन्दी कोश – डॉ. उदय चन्द्र जैन

Faculty of Humanities

Master of Arts (M.A.) - Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/04/03-A

IV Semester Paper –III-A : (PAPER CODE : 44543-A)

PAPER NAME - जैन आगम एवं व्याख्या साहित्य

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – तृतीय – ए : **Paper Code** 44543-A

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–तृतीय	**जैन आगम एवं व्याख्या साहित्य**	**100 अंक**
इकाई एक	शौरसेनी आगम, कार्तिकेयानुप्रेक्षा (स्वामीकार्तिकेय) गाथा 253 से 301 (ज्ञानस्वरूप एवं नय वर्णन) – डॉ. ए. एन. उपाध्ये	20 अंक
इकाई दो	पंचास्तिकाय (आ.कुन्दकुन्द) द्वितीय अधिकार (गाथा 105 से 153 नव पदार्थ एवं पुद्गल अस्तिकाय विवेचन)	20 अंक
इकाई तीन	पठित ग्रन्थों का दार्शनिक, भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	20 अंक
इकाई चार	आगम के व्याख्या साहित्य का परिचय एवं महत्त्व (निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, टीका)	20 अंक
इकाई पांच	शौरसेनी आगम की प्रमुख टीकायें	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. कार्तिकेयानुप्रेक्षा – डॉ. ए. एन. उपाध्ये
2. पंचास्तिकाय – पं. हीरा लाल शास्त्री
3. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3
4. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ. हीरा लाल शास्त्री
5. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन
6. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमि चन्द शास्त्री
7. जैन संस्कृति कोश, भाग 1–3 – प्रो. भाग चन्द जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/04/03-B

IV Semester Paper –III-B : (PAPER CODE : 44543-A)

PAPER NAME - पाण्डुलिपि सर्वेक्षण एवं सम्पादन

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – तृतीय – बी : **Paper Code** 44543-B

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–तृतीय	**पाण्डुलिपि सर्वेक्षण एवं सम्पादन**	**100 अंक**
इकाई एक	पाण्डुलिपि विज्ञान का सामान्य परिचय, इतिहास, परम्परा एवं प्रकार तथा लेखन सामग्री	20 अंक
इकाई दो	पाण्डुलिपियों के संग्रहण केन्द्रों का परिचय, सर्वेक्षण एवं कृति चयन की प्रविधि तथा विभिन्न ग्रन्थ सूचियों (केटेलॉग्स) का परिचय	20 अंक
इकाई तीन	पाण्डुलिपि–सम्पादन के नियम : सैद्धान्तिक विश्लेषण	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत पाण्डुलिपि ग्रन्थ की निर्धारित किसी एक पाठ्य कृति का सम्पादन (लगभग40–50 गाथाओं अथवा 4 पृष्ठों का सम्पादन कार्य)	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत पाण्डुलिपि ग्रन्थ की निर्धारित कृति का अनुवाद (हिन्दी अथवा अंग्रेजी अनुवाद), कृति परिचय एवं अध्ययन	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. पाण्डुलिपि सम्पादन कला – डॉ. राम गोपाल शर्मा दिनेश

2. पाण्डुलिपि विज्ञान – डॉ. सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर

3. पाठालोचन की भूमिका – डॉ. कत्रे

4. सामान्य पाण्डुलिपि विज्ञान – डॉ. महावीर प्रसाद जैन

5. भारतीय पुरालिपि विद्या – डॉ. कृष्णदत्त वाजपेयी

6. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द शास्त्री (पृ.247–296)

7 जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3

8. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 5, पं.अम्बालाल शाह

9 भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ. हीरा लाल शास्त्री

10 प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT - Elective course/04/04-A

IV Semester Paper –IV-A : (PAPER CODE : 44544-A)

PAPER NAME - जैन धर्म : स्वरूप एवं परम्परा

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – चतुर्थ – ए : **Paper Code** 44544-A

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 केडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–चतुर्थ	जैन धर्म : स्वरूप एवं परम्परा	100 अंक
इकाई एक	समणसुत्तं चयनिका (डॉ.के.सी.सोगानी) गाथा 1–60	20 अंक
इकाई दो	जैन आचार मीमांसा, गृहस्थाचार, श्रमणाचार, ज्ञान के प्रकार (मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय, केवलज्ञान)	20 अंक
इकाई तीन	जैन धर्म का स्वरूप – गुणस्थान, रत्नत्रय एवं मोक्ष स्वरूप	20 अंक
इकाई चार	तीर्थंकर परम्परा, ऋषभदेव, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर का जीवन–दर्शन	20 अंक
इकाई पांच	श्रमण परम्परा उमास्वाति, समन्तभद्र, अकलंक, प्रभाचन्द्र, हेमचन्द्र, यशोविजय दार्शनिक आचार्यो के अवदान	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. जैन दर्शन – मनन और मीमांसा – आ. देवेन्द्रमुनि

2. समणसुत्तं, प्रकाशक सर्वसेवा संघ, वाराणसी

3. जैन आचार और सिद्धान्त एवं स्वरूप – आ. देवेन्द्र मुनि

4. स्टडीज इन जैन फिलासाफी – डॉ. नथमल

5. परमात्म प्रकाश एवं योगसार – डॉ. ए. एन .उपाध्ये

6. जैन धर्म, पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री, मुजफ्फरनगर

7. जैन धर्म के प्रभावक आचार्य – साध्वी संघमित्रा

8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ. हीरालाल जैन

9. श्रावक धर्मदर्शन – उपाध्याय पुष्कर मुनि

10.जैन दर्शन एवं कबीर–एक तुलनात्मक अध्ययन – डॉ0 मन्जूश्री

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT - Elective course/04/04-B

IV Semester Paper –IV-B : (PAPER CODE : 44544-B)

PAPER NAME - प्राकृत आगम साहित्य – शौरसेनी आगम

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – चतुर्थ – बी : **Paper Code** 44544-B

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 केडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–चतुर्थ	**प्राकृत आगम साहित्य –शौरसेनी आगम**	**100 अंक**
इकाई एक	षट्खण्डागम – धरसेनाचार्य, पुष्पदन्त एवं भूतबलि (जीवट्ठान, सत्प्ररूपणा प्रथम खण्ड, के प्रथम 1से 46 सूत्र)	20 अंक
इकाई दो	समयसार – आचार्य कुन्दकुन्द (द्वितीय अधिकार)	20 अंक
इकाई तीन	मूलाचार – आचार्य वट्टकेर स्वामी (षडावश्यक अधिकार)	20 अंक
इकाई चार	पठित ग्रन्थों पर आलोचनात्मक प्रश्न	20 अंक
इकाई पांच	जैनागमों का भाषात्मक एवं मीमांसात्मक विवेचन तथा शौरसेनी प्राकृत व्याकरण की सामान्य विशेषताएँ	20 अंक

सहायक पुस्तकें:—

1. जैन दर्शन — मनन और मीमांसा — आ. देवेन्द्रमुनि

2. षट्खण्डागम — धरसेनाचार्य, पुष्पदन्त एवं भूतबलि (जीवट्ठान, सत्प्ररूपणा प्रथम खण्ड) सोलापुर

3. जैन आचार और सिद्धान्त एवं स्वरूप — आ. देवेन्द्र मुनि

4. स्टडीज इन जैन फिलासाफी — डॉ. नथमल

5. समयसार — आचार्य कुन्दकुन्द

6. जैन धर्म, पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री, मुजफ्फरनगर

7. जैन धर्म के प्रभावक आचार्य — साध्वी संघमित्रा

8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान — डॉ. हीरालाल जैन

9. श्रावक धर्मदर्शन — उपाध्याय पुष्कर मुनि

10.मूलाचार — आचार्य वट्टकेर स्वामी, सम्पादक —डॉ. फूलचन्द जैन ''प्रेमी'', वाराणसी

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/04/05-A

IV Semester Paper –V-A : (PAPER CODE : 44545-A)

PAPER NAME - **जैन कला एवं स्थापत्य**

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – पंचम – ए : Paper Code 44545-A

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–पंचम	**जैन कला एवं स्थापत्य**	**100 अंक**
इकाई एक	जैन कला का उद्भव एवं विकास	20 अंक
इकाई दो	जैन धर्म और कला का सम्बन्ध	20 अंक
इकाई तीन	जैन शिल्प, स्थापत्य कला – एलोरा, खजुराहो एवं माउण्ट आबु के मन्दिर	20 अंक
इकाई चार	मथुरा की जैन मूर्तिकला एवं श्रवणबेलगोला की जैन मूर्तियां	20 अंक
इकाई पांच	जैन चित्रकला – अजन्ता, एलोरा की गुफायें	20 अंक

सहायक पुस्तकें:—

1. जैन धर्म — पं. कैलाश चन्द्र शास्त्री
2. जैन चित्र कल्पद्रुम — साराभाई नवाब, 1936, अहमदाबाद
3. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा और मन्दिर — वासुदेव उपाध्याय
4. भारतीय मूर्तिकला का इतिहास — रमानाथ मिश्र
5. जैन संस्कृति कोश — प्रो. भाग चन्द्र जैन भाग 1—3
6. स्टडीज इन जैन आर्ट — यू. जी. शाह, 1955, बनारस
7. जैन मिनिएचर पेंटिंग्स फ्राम वेस्टर्न इंडिया — मोतीचन्द, 1914
8. कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन — डॉ. प्रेम सुमन जैन
9. पउमचरियं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन — डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/04/05-B

IV Semester Paper –V-B : (PAPER CODE : 44545-B)

PAPER NAME - प्राकृत काव्य साहित्य की विविध विधाएँ

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – पंचम – बी : **Paper Code** 44545-B

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–पंचम	**प्राकृत काव्य साहित्य की विविध विधाएँ**	**100 अंक**
इकाई एक	प्राकृत साहित्य का ऐतिहासिक परिचय एवं प्राकृत काव्य साहित्य की विधाएँ और महत्ता	20 अंक
इकाई दो	महाकाव्यों की परम्परा एवं प्राकृत महाकाव्यों का स्वरूप : ऐतिहासिक, पौराणिक एवं शास्त्रीय महाकाव्य	20 अंक
इकाई तीन	प्राकृत चरित एवं कथा साहित्य का वैविध्य एवं विशिष्ट्य	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत खण्डकाव्य एवं मुक्तककाव्य : परम्परा एवं विकास	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत काव्य साहित्य पर शोधात्मक विमर्श : 1. सम्पादित एवं समालोचनात्मक शोध कार्य, 2. शोध की भावी दृष्टि, 3.शोध संस्थाएँ अवं आधुनिक शोध कर्ताओं का परिचयात्मक विश्लेषण	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. जैन धर्म – पं. कैलाश चन्द्र शास्त्री
2. जैन चित्र कल्पद्रुम – साराभाई नवाब, 1936, अहमदाबाद
3. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा और मन्दिर – वासुदेव उपाध्याय
4. भारतीय मूर्तिकला का इतिहास – रमानाथ मिश्र
5. जैन संस्कृति कोश – प्रो. भाग चन्द्र जैन भाग 1–3
6. स्टडीज इन जैन आर्ट – यू. जी. शाह, 1955, बनारस
7. जैन मिनिएचर पेंटिंग्स फ्राम वेस्टर्न इंडिया – मोतीचन्द, 1914
8. कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. प्रेम सुमन जैन
9. पउमचरियं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/04/06-A

IV Semester Paper –VI-A : (PAPER CODE : 44546-A)

PAPER NAME - प्राकृत के प्रमुख रचनाकार – प्रोजेक्ट वर्क

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – षष्ठ – ए : Paper Code 44546-A

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

Note :Semester IV, Paper VI-A में प्राकृत के प्रमुख रचनाकारों पर प्रोजेक्ट वर्क के अन्तर्गत प्राकृत के प्रमुख रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व विषयक अवदान से सम्बद्ध प्रोजेक्ट वर्क लगभग 30–40 पृष्ठों में तैयार करके जमा करना होगा, जिसका मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा विश्वविद्यालय द्वारा 80 अंकों से कराया जायेगा तथा 20 अंकों की इन्टरनल मौखिक परीक्षा स्थानीय/विभागीय विशेषज्ञों द्वारा ली जायेगी। इसमें प्राकृत, अपभ्रंश भाषा तथा साहित्य एवं जैनविद्या के किसी एक समर्थ आचार्य के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व विषयक अवदान को लेकर प्रोजेक्ट वर्क किया जा सकेगा। इसके विकल्प में Paper VI-B में प्राकृत, अपभ्रंश भाषा तथा साहित्य एवं जैनविद्या से सम्बद्ध किसी एक विषय पर लघु शोध प्रबन्ध लगभग 50–60 पृष्ठों में तैयार करके जमा करना होगा, जिसका मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा 80 अंकों से कराया जायेगा तथा 20 अंकों की इन्टरनल मौखिक परीक्षा स्थानीय/विभागीय विशेषज्ञों द्वारा ली जायेगी।

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/04/06-B

IV Semester Paper –VI-B : (PAPER CODE : 44546-B)

PAPER NAME - **लघु शोध प्रबन्ध**

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – षष्ठ – बी : Paper Code 44546-B

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

NOTE ;- Semester IV, Paper VI-B में प्राकृत, अपभ्रंश भाषा तथा साहित्य एवं जैनविद्या से सम्बद्ध किसी एक विषय पर लघु शोध प्रबन्ध लगभग 50–60 पृष्ठों में तैयार करके जमा करना होगा, जिसका मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा 80 अंकों से कराया जायेगा तथा 20 अंकों की इन्टरनल मौखिक परीक्षा स्थानीय/विभागीय विशेषज्ञों द्वारा ली जायेगी।